श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, भूपालगंज भीलवाड़ा

यह पाटबंद (देवरी) मंदिर नगर के मुख्य बाजार के मध्य में व रेल्वे स्टेशन से केवल आधा किलोमीटर दूर महावीर पार्क के पास स्थित है। यह मंदिर 30 वर्ष प्राचीन है। यह मंदिर प्रथम मंजिल पर स्थापित है। मंदिर में कांच का सुंदर कार्य किया हुआ है। मंदिर की स्वच्छता, पूजा नियमित होती है।

मंदिर का भूखण्ड नगरपालिका द्वारा आंवटित किया हुआ है । मंदिर व उपाश्रय समाज द्वारा बनाया गया है ।नीचे दुकाने हैं।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री पार्श्वनाथ भगवान (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 21'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर वि. सं. 2048 का लेख है।

(2) श्री आदिनाथ भगवान (मूलनायक के दाएं) की श्वेत पाषाण की 15'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2051 का लेख है।

(3) श्री महावीर भगवान (मूलनायक के बाएं) की श्वेत पाषाण की 15'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2051 का लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

(1) श्री शांतिनाथ भगवान की 8.5'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर वीर सं. 2511 का लेख है।

(2) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 6'' का है। इस पर सं. 2041 का लेख है।

(3) श्री अष्ठमंगल यंत्र 6'' x 3'' का है। इस पर सं. 2028 का लेख है।

दाहिनी ओर आलियों में :

(1) श्री अजितनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री पार्श्वनाथ की श्वेत पाषाण की 13'' ऊंची प्रतिमा है।

(3) श्री शांतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 11'' ऊंची प्रतिमा है।

बाहर आलियों में :

(1) माणिभद्र देव की श्वेत पाषाण की 13'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 12'' ऊंची प्रतिमा है।

(3) श्री शासन देवी की श्वेत पाषाण की 7'' ऊंची प्रतिमा है।

बाई ओर आलियों में :

(1) श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 8'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 13'' ऊंची प्रतिमा है।

(3) श्री नेमिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 11'' ऊंची प्रतिमा है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

(1) श्री शांतिनाथ भगवान की 8.5'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2041 का लेख है।

(2) श्री शांतिनाथ भगवान की 8.5'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2045 का लेख है।

(3) श्री जिनेश्वर भगवान की 12'' ऊंची चतुर्विंशांति प्रतिमा है। इस पर सं. 2041 का लेख है।

(4) श्री आदिनाथ भगवान की 7'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर विर. सं. 2511 का लेख है।

(5) श्री बीसस्थानक यंत्र गोलाकार 10'' का है। इस पर सं. 2041 कार्तिक कृष्णा 6 का लेख है।

(6,7,8) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 4'', 4'', 4'' ऊंची प्रतिमा है।

(9) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 6.5'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1539 का लेख है।

(10) श्री शांतिनाथ भगवान की 7'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1344 का लेख है।

(11,12,13) श्री जिनेश्वर भगवान की 8'', 8'', 8'' ऊंची पंच तीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 2068 का लेख है।

(14) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 4.5'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर वीर सं. 2509 का लेख है।

(15) श्री शांतिनाथ भगवान की 4.5'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर वीर सं. 2509 का लेख है।

(16) श्री महावीर भगवान की 2.5'' ऊंची प्रतिमा है।

(17) श्री समवसरण स्तम्भ 12'' ऊंचा जिस पर चार प्रतिमाएं स्थापित है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा फाल्गुन शु. 5 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर का संचालन श्री पार्श्वनाथ जैन मूर्तिपूजक संघ भीलवाड़ा द्वारा किया जाता है। जिसके पदाधिकारी है : वर्तमान में श्री अमृतलाल जी सुराणा अध्यक्ष (01482-224430) श्री मुकुन्दजी बोहरा- मंत्री (01482-224430)

श्री सरस्वती देवी पूजन मंत्र

श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर सांगानेरी गेट के पास, धानमण्डी-311001, भीलवाड़ा

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय के धानमण्डी मौहल्ला में स्थित है। यह मंदिर करीब 500 वर्ष प्राचीन यति श्री लालचंद जी द्वारा निर्मित बतलाया गया लेकिन इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता लेकिन प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख के आधार पर 500 वर्ष प्राचीन की सम्भावना बनती है। तथा सभी प्रतिमा अति प्राचीन प्रतीत होती है। यह यति मंदिर ही था।

(1) श्री आदिनाथ भगवान (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 23'' ऊंची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

(2) श्री कुंथुनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 13'' ऊंची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर कुंथुनाथ बिम्ब उत्कीर्ण है।

(3) श्री चन्द्रप्रभ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 14'' ऊंची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर सं. 1533 का लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

(1–2–3) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 6'', 6'' व 3'' ऊंची प्रतिमाएं है।

(4) श्री सम्भवनाथ भगवान की प्रतिमा है। इस पर वीर सं. 2511 पोष वदि 6 का लेख है।

(5) श्री सिद्धचक्र यंत्र 7'' x 5'' का है। इस पर कोई लेख नहीं है।

(6) श्री अंक पुज्य यंत्र 4.5'' x 5'' का है। इस पर कोई लेख नहीं है।

(7) श्री सिद्धचक्र यंत्र 6'' x 4.5'' का ऊपर से गोलाई लिए हुए है।

(8) श्री अष्ठमंगल यंत्र 6'' x 3.5'' का है। इस पर वीर सं. 2498 वै.शु. 6 का लेख है।

(9–10) श्री ताम्र यंत्र 3'' x 2.5'' व 2''x 2'' का है।

(11) श्री पद्मावती देवी की 6'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1782 का लेख है।

(12) श्री ताम्र यंत्र 18'' x 18'' का (सम्भावित नवग्रह) जिस पर आदिनाथ नमः बीच में उत्कीर्ण है। इसी पर आठ यंत्र चारों ओर उत्कीर्ण है। इस पर सं. 1954 का लेख है।

(13) श्री ताम्र यंत्र 18'' x 18'' का (सम्भावित बीसस्थानक) जिस पर इशानायक नमः कुबेराय नमः ओम नमो नमः नमः आदि उत्कीर्ण है। इस पर सं. 1954 का लेख है। वेदी की दीवार के बीच पबासन देवी की मूर्ति स्थापित है। इस पर सं. 2027 पोष शु. 9 का लेख है।

बाई ओर के आलिएं में:

श्री अभिनंदन भगवान की श्वेत पाषाण की 15'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1992 वै.शु. 10 का लेख है।

पीछे की ओर आलिएं :

(1) श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा स्थापित है।

बाहर आलिए :

(1) श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 13'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर अस्पष्ट लेख है।

(2) श्री चक्रेश्वरी देवी की श्वेत पाषाण की 12''ऊंची प्रतिमा हैं। इस पर सं. 2059 का लेख है।

(3) अधिष्ठायक देव की मूर्ति स्थापित है। दोनों ओर एक–एक कमरा है।

बाहर हॉल में :

(1) श्री जिनकुशलसूरि जी की श्वेत पाषाण की 13'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2059 ज्येष्ठ कृष्णा 7 का लेख है।

(2) प्रतिमा के पास (सामने की ओर)–

श्री जिनकुशलसूरि जी के पादुका जोड़ी 4'' x 3'' के पाषाण पर स्थापित है।

(3) श्री जिनकुशलसूरि जी की पादुका जोड़ी 12'' x 10'' के देशी पाषाण के पट्ट पर स्थापित है। इस पर अस्पष्ट लेख है।

(4) अधिष्ठायक देव की चार प्रतिमाएं स्थापित है।

दोनों ओर (मंदिर की नाल के दोनों ओर) प्रवेश करते समय

(1) केसर घर, (2) स्टोर घर बने हुए है।

मंदिर की बनावट 5+5+3+3 = 16 बारियों में बना है।

वार्षिक ध्वजा नहीं चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से अशोक जी सिसोदिया द्वारा की जाती है। सम्पर्क सूत्र- 9829047259

मंदिर की जमीन भी है, लेकिन किसके अधिकार में है ज्ञात नहीं है। जानकारी कर अग्रिम कार्यवाही की जानी चाहिए। मंदिर की दुकानें भी है व मकान है।

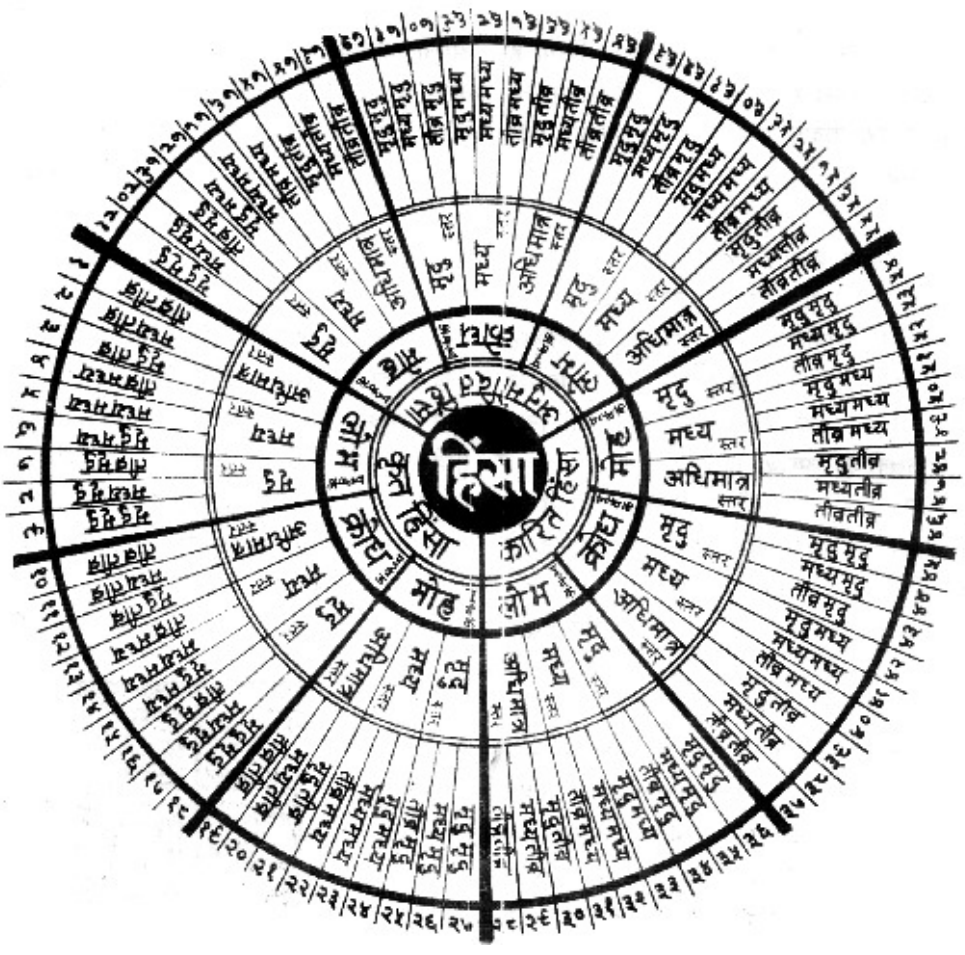

हिंसा के प्रकार

श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, कसारा बाजार-311001, भीलवाड़ा

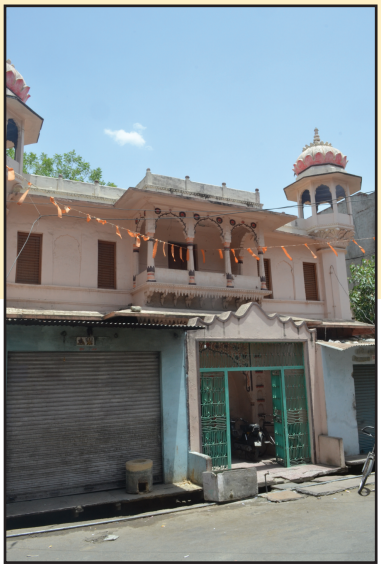

यह पाटबंद मंदिर नगर के कसारा बाजार के मध्य में स्थित है। मंदिर 300 वर्ष प्राचीन बताया जाता है। उल्लेखानुसार इस मंदिर का निर्माण यति श्री केसरीचंद जी द्वारा कराया गया। प्राचीनता का आधार प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख को माना जा सकता है। मंदिर की बनावट के आधार पर 300 वर्ष प्राचीन होना सम्भावित है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री शांतिनाथ भगवान (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 10'' ऊंची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

(2) श्री शांतिनाथ भगवान (मूलनायक के दाएं) की श्वेत पाषाण की 11'' ऊंची प्रतिमा हैं। इस पर सं. 1826 का लेख है।

(3) श्री धर्मनाथ भगवान (मूलनायक के दाएं) की श्वेत पाषाण की 9'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1869 का लेख है।

(4) श्री चन्द्रप्रभ भगवान (मूलनायक के बाएं) की बादामी पाषाण की 9'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर अस्पष्ट लेख हैं।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

(1) श्री विमलनाथ भगवान की 8'' ऊंची पंच तीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1592 का लेख है।

(2) श्री शांतिनाथ भगवान की 8'' ऊंची पंच तीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1583 माघ शु. 15 का लेख है।

(3) श्री सुमतिनाथ भगवान की 7'' ऊंची पंच तीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1522 का लेख है।

(4) श्री आदिनाथ भगवान की 10'' ऊंची चतुर्विंशति प्रतिमा है। इस पर सं. 1420 का लेख है।

(5) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 10'' ऊंची चतुर्विंशति (22 तीर्थंकर) प्रतिमा है।

(6) श्री नेमिनाथ भगवान की 7'' ऊंची पंच तीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1504 का लेख है।

(7) श्री जिनेश्वर भगवान की 7'' ऊंची पंच तीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1517 का लेख है और देवसुंदर मूर्ति के शिष्य द्वारा प्रतिष्ठित है।

(8) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 3'' ऊंची प्रतिमा है।

(9) श्री त्रिमूर्ति खड़ी मूर्तियां है। इस पर सं. 1504 का लेख है।

(10–11) श्री जिनेश्वर भगवान की 2.7'' व 2'' की प्रतिमाएं है।

(12) पादुका जोड़ी 1.5'' x 1.5'' की है।

(13) धातु यंत्र 1.7'' x 1.7'' का है।

(14) श्री आदिनाथ भगवान की 11'' ऊंची चतुर्विंशति प्रतिमा है।

(15) श्री जिनेश्वर भगवान की 4'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1965 का लेख है।

(16) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 3'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1569 का लेख है।

(17) श्री अम्बिका देवी की 4'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1510 का लेख है।

(18) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 2'' ऊंची प्रतिमा है।

(19) श्री जिनेश्वर भगवान की 4'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1965 का लेख है।

(20) श्री जिनेश्वर भगवान की 3.5'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1565 का लेख है।

(21) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 1.5'' ऊंची प्रतिमा है।

(22) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 6'' का है। इस पर सं. 1710 माघ शु. 5 का लेख है।

बाहर :

(1) श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 17'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 14'' ऊंची प्रतिमा है।

अधिष्ठायक देव की मूर्ति स्थापित है।

वार्षिक ध्वजा नहीं चढ़ाई जाती है।

ऊपर मकान के ताले लगे है, बंद है। जमीन बाहर उप नगर सुवाणा कोटड़ी आदि

स्थानों पर है। अन्यत्रों के कब्जे में है। जानकारी करनी चाहिए। दो दुकानें है किराये पर दे रखी है जिसकी राशि बकाया है। पुजारी श्री नारायणजी को भी इसका पारिश्रमिक नहीं मिलता है। व्यवस्था अच्छी नहीं है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से कोई नहीं है। समाज के कुछ सदस्यों से सम्पर्क किया। जानकारी मिली है कि यह मंदिर विजयगच्छ के यति का था। वर्तमान में देखरेख कोई नहीं करता है। यदि समाज के सदस्यों की सहमति पर पार्श्वनाथ भगवान की पेढी ट्रस्ट की ओर से प्रयत्न करे, मंदिर की असातना को बचा सके ।

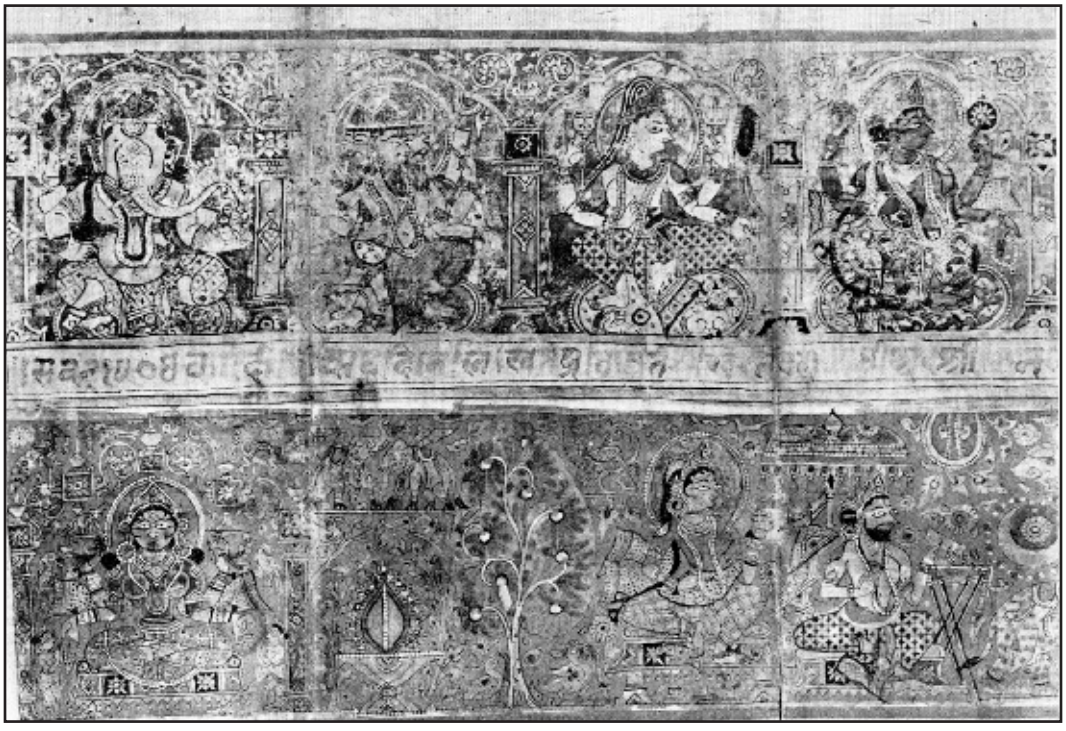

यह चित्र आकर्षिक केनवास पट्टे पर बना है जिसका नाम बसंत विलास स्क्रोल है । इसमें सुपार्श्वनाथ चरित्र को दर्शाया है । ये चित्र लंदन के विक्टोरिया व अलबर्ट संग्रहालय में है । ये चित्र कपडे पर सन् 1447 में बनाई गई है । इसमें जानवर, पक्षी, हाथी, मोर, पेड आदि के चित्र है जिनको जय यंत्र या विजयायंत्र कहा जाता है । जो जैन मुनि खरतरगच्छ के लिए बनाई है । यह कपड़ा अहमदाबाद में पालनपुर के किसी सदस्य के अधिकार से बना है ।

श्री महावीर भगवान का मंदिर, पुरानी धानमण्डी-311001, भीलवाड़ा

यह पाटबंद मंदिर नगर के पुरानी धानमण्डी में गली के भीतर स्थित है। यह मंदिर 300 वर्ष प्राचीन बतलाया जाता है। इसका कोई प्रमाण या ऐसा कोई उल्लेख नहीं है। केवल वर्तमान में यति श्री भोलाराम जी बताते है कि इनके पूर्वजों ने 500 वर्ष पूर्व बनाया है। मकान की बनावट के आधार पर सम्भावित हो सकता है। उल्लेखानुसार यह मंदिर यति श्री हीर सोभाग्य जी द्वारा निर्मित है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री महावीर भगवान (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 14'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1908 का लेख है।

(2) श्री जिनेश्वर भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्याम पाषाण की 14'' ऊंची प्रतिमा है। इस प्रतिमा पर भाषा जो स्पष्ट नहीं है। बराह या गेंडा स्थापित है। आचार्य भगवत से जानकारी की जानी चाहिये। अतः श्री विमलनाथ भगवान की प्रतिमा हो सकती है।

(3) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 9'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है। बोलचाल की भाषा में आदिनाथ भगवान के नाम से जाना जाता है। पीछे टाईल्स लगी हुई है।

बाहर :

1) श्री माणिभद्र देव की प्रतिमा स्थापित है।

(2) श्री अजितनाथ देव की प्रतिमा है।

मंदिर की जमीन थी, अन्यत्रों ने कब्जा कर रखा है। मकान है तथा दो दुकानें है। किराया प्राप्त नहीं हो रहा है। विवाद चल रहा है।

वार्षिक ध्वजा नहीं चढ़ाई जाती हैं।

मंदिर की देख रेख यति श्री धुलीचंद भोलाराम द्वारा की जा रही है। सम्पर्क सूत्र - मो. नं. 9252180974

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर व दादावाड़ी-311001, भीलवाड़ा

यह शिखरबंद मंदिर नगर के बाहरी क्षेत्र की ओर पंचमुखी हनुमान मंदिर के पास स्थित है। यह मंदिर 10 वर्ष प्राचीन है। इस मंदिर व दादावाड़ी के लिए भूमि इन्दौर निवासी बापना परिवार द्वारा भेंट में समाज को दी। मंदिर समाज द्वारा निर्मित है। पूर्व में दादावाड़ीश्री जिनकुशलसुरि जी की पादुका व प्रतिमा की देवरी की प्रतिष्ठा पूर्व में बापना परिवार द्वारा कराई गई थी।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 41'' ऊंची प्रतिमा है। परिकर बना हुआ है। इस पर सं. 2058 (22–2–02) का लेख है।

(2) श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 19'' ऊंची प्रतिमा है।

(3) श्री महावीर भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 19'' ऊंची प्रतिमा है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

(1) श्री चतुर्विशंति (2) पंचतीर्थी प्रतिमा (3) जिनेश्वर भगवान (4) अष्ठमंगल यंत्र

बाहर आलियों में :

(1) श्री गौतम स्वामी (2) श्री पुण्डरीक स्वामी (3) श्री चक्रेश्वरी देवी (4) श्री पद्मावती देवी (5)श्री जिनेश्वर सूरि जी (6) श्री कान्तिसागर सूरि जी की श्वेत पाषाण की प्रतिमा है।

ये सभी प्रतिमाएं श्वेत पाषाण की है ।

श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की प्रतिमा स्थापित है । श्री भोमिया देव की प्रतिमा स्थापित है ।

इसी परिसर में :

श्री जिनकुशल सूरि (दादावाड़ी) का मंदिर स्थापित है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

देवरी में :

(1) श्री जिनकुशल सूरि जी की श्वेत पाषाण की प्रतिमा स्थापित है।

इसके पास ही श्री जिनकुशल सूरि जी के चरण पादुका श्वेत पाषाण के स्थापित है। देवरी के पास (सीढ़ी के चढ़ते समय बाईं ओर) एक चरण पादुका की जोड़ी छोटे स्तम्भ में स्थापित है।

विश्लेषण यह है :

(1) स्तम्भ में स्थापित पादुका प्रथम चरण की है।

(2) स्थापित पादुका द्वितीय चरण की है।

(3) प्रतिमा तृतीय चरण की है।

पुजारी के इन्कार करने से नाप व लेख नहीं लिया जा सका। तर्क करना उचित नहीं समझा।

दादावाड़ी का बहुत बड़ा सभामण्डप है। इसके अलावा आलिये में :

(1) गौरा भैरव की प्रतिमा श्वेत पाषाण की स्थापित है।

(2) श्री अम्बिका देवी की श्वेत पाषाण की प्रतिमा स्थापित है।

(3) श्री काला भैरव की श्याम पाषाण की प्रतिमा स्थापित है।

(4) साध्वी श्री राजेन्द्र श्री जी की श्वेत पाषाण की प्रतिमा कांच में जड़ित है। परिक्रमा कक्ष बना है।

साध्वी श्री राजेन्द्र श्रीजी – साध्वी प्रतिमा का प्रचलन प्रतिष्ठा व पूजा

वैसे मैंने (लेखक) ने कई अनेक प्रतिमाओं के दर्शन किये लेकिन साध्वीगण की प्रतिमा के न दर्शन ही हुए और न ही इतनी गम्भीरता से देखा। वर्तमान में भीलवाड़ा जिले के मंदिरों का सर्वेक्षण करने पर साध्वी की प्रतिमा को देखा, विचार आया कि साध्वीगण की प्रतिमा का पूजन क्यों ? लेखक द्वारा अपने सर्वे के समय में वास्तविकता का ज्ञान हुआ जिसका वर्णन किया जा रहा है महावीर भगवान के शासनकाल में ही साध्वी की प्रतिमा का दर्शन, पूजा प्रथा का प्रचलन रहा है।

महावीर भगवान की मुख्य साध्वी श्री चन्दनबाला की परम्परा से समय समय पर अनेक साध्वियों की महानता, उपकारों का उल्लेख हुआ है। प्रचीनकाल में साध्वियों की प्रतिमा का निर्माण, प्रतिष्ठा कराना कोई आश्चर्यजनक बात नहीं थी।

सं. 1956 में महावीर जैन विद्यालय, मुम्बई के द्वारा आचार्य श्री विजयवल्लभसूरि स्मारक ग्रंथ सभी भाषा में प्रकाशित हुए जिसमें हिन्दी विभाग का संपादन आगम प्रभाकर मुनि श्री पुण्य विजय जी म.सा., डॉ. साड़ेसरा व प्रो. श्री पृथ्वीराज जैन द्वारा किया गया।

गुजराती भाषा की पुस्तक के पृष्ठ 172 पर जैन साध्वियों की पाषाण युक्त प्रतिमा पर प्रकाश डालते हुए श्री यशोदेव विजय जी (यशोदेवसूरि) का प्रकाशित लेख में लिखा है कि–

प्राचीनकाल में शिल्पकला के अन्तर्गत आचार्य व साधु साध्वियों के स्मारक व स्तूप के रूप में ही निर्माण होते आये थे। कालान्तर में प्रतिमाओं के रूप में प्रदर्शित होने लगी। उस समय भी साध्वियों की प्रतिमाओं का वर्णन आता रहा है। लेकिन यह अप्रकाशित ही रहा। इन सब तथ्यों को श्री यशोदेवविजय जी ने दो साध्वियों की प्रतिमाओं का वर्णन सचित्र वर्णन किया और लिखा कि साध्वी की प्रतिमा का प्रचलन कब से हुआ यह निश्चित नहीं कहा जा सकता। हाँ प्रस्तुत प्रतिमाएं 12 वी शताब्दी की निर्मित है इसलिए इनका प्रचलन इसके पूर्व का ही है।

प्रतिमा नं. 1 :

यह आरास की खड़ी प्रतिमा है। इस साध्वी के हाथ में साधु जीवन के प्रतीक ओगा, मूँहपती आदि लिए हुए है। वे हाथ जोड़कर नमस्कार मुद्रा में खड़ी है। पैरो पर वस्त्र धारण किए हुए है तथा कम्बली रखी हुई है यह प्रतिमा वि. सं. 1205 की है जो श्री यशोदेवविजय द्वारा संग्रहित है। इस प्रतिमा के नीचे महतरा सपरिवार उत्कीर्ण है जो पालीताणा के साहित्य मंदिर में प्रदर्शित है।

प्रतिमा नं. 2

यह आरास की प्रतिमा वि.सं. 1298 की है जो गुजरात के खेड़ागांव के पास जो मातर मंदिर तीर्थ की है। इस पर लेख आर्या पद्म सिरी का है इस साध्वी को प्रवचन देते हुए दर्शाया गया है इस प्रतिमा को भी धर्म के प्रतीक उपकरणो के साथ दर्शाया है ।

साध्वी प्रतिमा को प्रतिष्ठा का विधी विधान 15 वीं शताब्दी में रचित वर्धमानसूरि के आचार दिनकर ग्रंथ के 13 वें अधिकार में भी उल्लेख है। वर्तमान में नाकोड़ा तीर्थ के मंदिर में साध्वी सज्जन श्रीजी, महरोली दिल्ली में साध्वी श्री रत्ना श्रीजी की, साध्वी श्री विचक्षण श्रीजी का और दिल्ली के गुरू

वल्लभ स्मारक में साध्वी महतरा मृगावती श्रीजी की समाधि पर प्रतिष्ठित प्रतिमा है।

प्राचीन ग्रंथों के रचयिता श्री हरिभद्र सूरि जी की समाधि मंदिर जो चितौड़ (मेवाड़) के किले के नीचे है। इस पर 61" ऊंची प्रतिमा है। यह साध्वी के साधुत्व की महानता थी वे छठी शताब्दी में भी हरिभद्रसुरि ने आयुपर्यन्त तक अपने आपको महातरा सुत (पुत्र) ही कहा। दर्शन पूजा अर्चना आदि करते है।

(5) श्री घंटाकर्ण महावीर की श्वेत पाषाण की प्रतिमा स्थापित है ।

वार्षिक ध्वजा ज्येष्ठ शुक्ला 9 को चढ़ाई जाती है।

सभामण्डप की दीवारों पर श्री दादागुरू की जीवन चरित्र पट्ट है।

इस मंदिर की देखरेख श्री पार्श्वनाथ जैन मूर्तिपूजक संघ, भीलवाड़ा द्वारा की जाती है । अध्यक्ष श्री अमृतलाल जी सुराणा व श्री मुकुन्द जी बोहरा द्वारा की जाती है । सम्पर्क सूत्र : 01482-224430

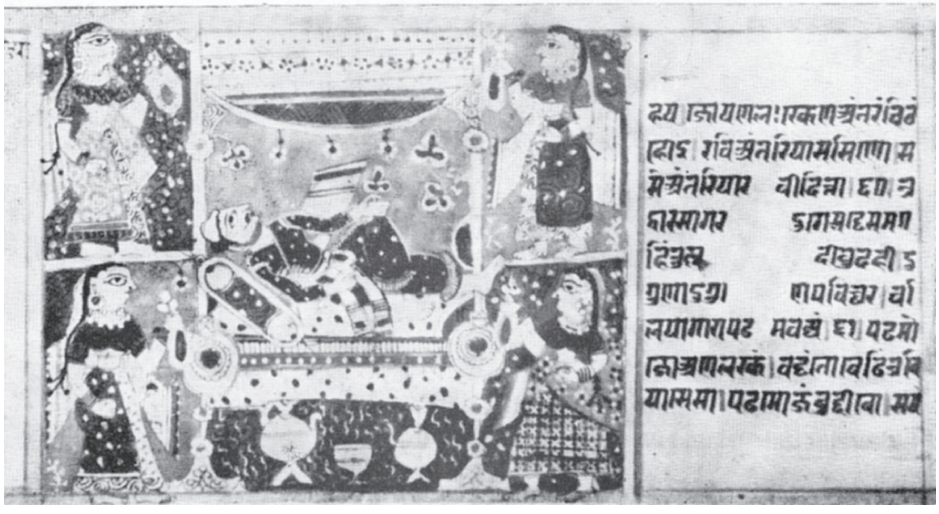

यह चित्र समग्रहिणी सूत्र में वि. सं. 1644 में बना है जो पूण्यविजय जी म.सा. द्वारा संग्रहित है । इसमें स्त्रीयों की ओढ़नी के रंग को महत्व दिया गया है ।

श्री आदीश्वर भगवान का मंदिर सांगानेर-311001 जिला भीलवाड़ा

यह शिखरबंद मंदिर जिला भीलवाड़ा से 5 किलोमीटर दूर है। यह नगर परिषद् क्षेत्र में ही डाडो की गली में स्थित है। यह मंदिर करीब 500 वर्ष प्राचीन है। इसकी पुष्टि स्थापित प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख है तथा यह भी बतलाया गया कि ये प्रतिमा पहले से सैंकड़ों वर्षों से स्थापित है। मंदिर की बनावट से भी इसकी पुष्टि होती है। मंदिर के 5 स्तम्भ है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री आदिनाथ भगवान (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 15'' ऊंची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

(2) श्री जिनेश्वर भगवान (मूलनायक के दाएं) की श्याम पाषाण की 8'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1526 का लेख है।

(3) श्री पार्श्वनाथ भगवान (मूलनायक) की श्याम पाषाण की 10'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1538 का लेख है।

उत्थापित प्रतिमाएं व यंत्र :

(1) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 5'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर अस्पष्ट लेख है।

(2) श्री आदिनाथ की धातु की 5'' ऊंची पंच तीर्थी प्रतिमा है। इस पर 1444 का लेख है।

(3) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 1.5'' ऊंची प्रतिमा है।

(4) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 4.5'' का है। इस पर सं. 2045 वैशाख शुक्ला 5 का लेख है।

आलियों में :

(1) श्री गौमुख यक्ष की श्वेत पाषाण की 11'' ऊंची उत्थापित प्रतिमा है।

(2) श्री चक्रेश्वरी देवी की श्वेत पाषाण की 11'' ऊंची उत्थापित प्रतिमा है।

(3) श्री अधिष्ठायक देव की मूर्ति स्थापित है।

मंदिर की 2 दुकानें है जो किराये पर है तथा 3 बीघा जमीन है जिस पर कृषि होती है।

वार्षिक ध्वजा सभी मंदिरों में एक साथ चढ़ती है। कोई तिथि निश्चित नहीं है।

मूर्तिपूजक समाज का एक भी सदस्य नहीं है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से राजेश जी पोखरना द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र - 9413768185

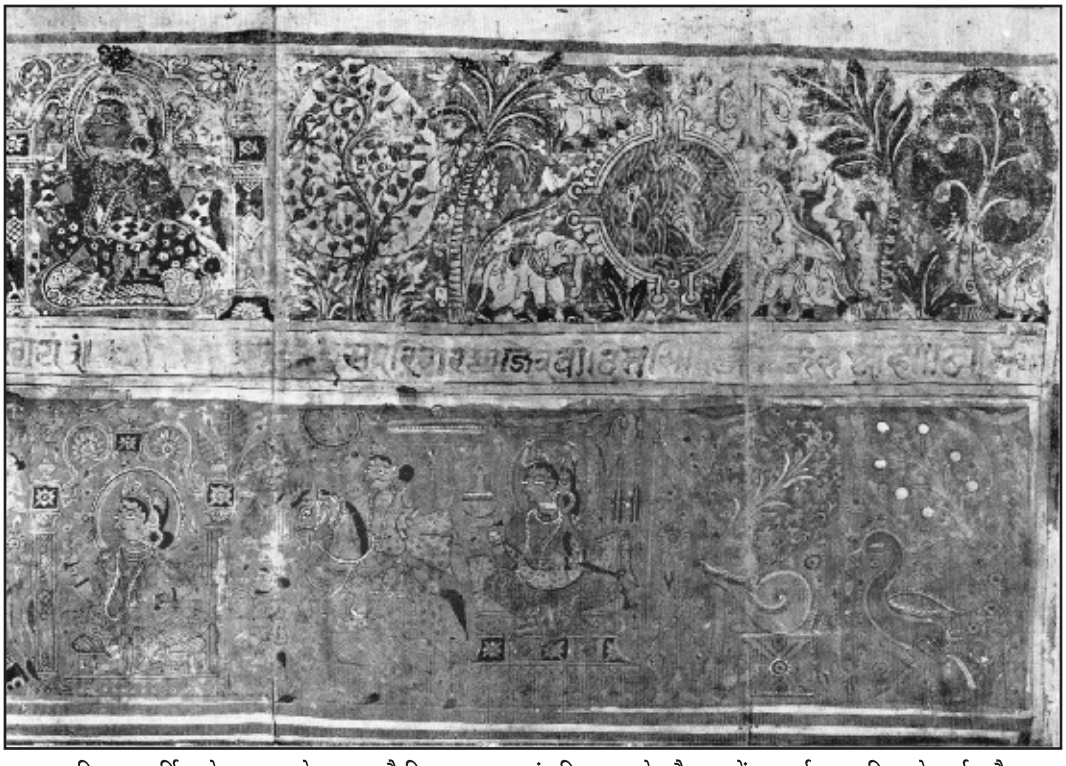

यह चित्र आकर्षिक केनवास पट्टे पर बना है जिसका नाम बसंत विलास स्क्रोल है। इसमें सुपार्श्वनाथ चरित्र को दर्शाया है। ये चित्र लंदन के विक्टोरिया व अलबर्ट संग्रहालय में है। ये चित्र कपडे पर सन् 1447 में बनाई गई है। इसमें जानवर, पक्षी, हाथी, मोर, पेड़ आदि के चित्र है जिनको जय यंत्र या विजयायंत्र कहा जाता है। जो जैन मुनि खरतरगच्छ के लिए बनाई है। यह कपड़ा अहमदाबाद में पालनपुर के किसी सदस्य के अधिकार से बना है।

श्री चन्द्रप्रभ भगवान का मंदिर सांगानेर-311011, जिला भीलवाड़ा

यह पाटबंद मन्दिर जिला मुख्यालय से 5 किलोमीटर दूर हैं यह नगर परिषद क्षेत्र में ही चारभुजा मंदिर के पास स्थित हैं।

उल्लेखानुसार यह मंदिर सं. 1840 के लभगभ का निर्मित है। यह मंदिर 500 वर्ष प्राचीन बतलाया गया। जिसकी पुष्टि प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख से होती है। मंदिर के तीन स्तम्भ है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री चन्द्रप्रभ भगवान (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 11'' ऊंची प्राचीन प्रतिमा है।

(2) श्री सम्भवनाथ भगवान (मूलनायक के दाएं) की श्वेत पाषाण की 10'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1675 वैशाख मासे ..... 13 का लेख है।

(3) श्री महावीर भगवान (मूलनायक के बाएं) की श्वेत पाषाण की 10'' ऊंची प्रतिमा है।

यक्ष देव की श्याम पाषाण की प्रतिमा है। अधिष्ठापक देव की मूति स्थापित है।

वार्षिक ध्वजा सभी मंदिरों के साथ चढ़ती है। कोई तिथि निश्चित नहीं है।

उपाश्रय/स्थानक मंदिर के साथ ही है।

लकड़ी का पाट खराब हो रहे है, बदलने व जीर्णोद्धार की आवश्यकता है।

मूर्तिपूजक समुदाय का एक भी सदस्य नहीं है । स्थानीय स्तर पर कोई नहीं देखता, पुजारी पूजा करता है

श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, हलेड़-311011, तहसील भीलवाड़ा

यह घूमटबंद मंदिर जिला व तहसील मुख्यालय से 10 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर 100 वर्ष प्राचीन बताया गया है। यह मंदिर श्री रूपचंदजी पारख के पिता श्री चम्पालाल जी पारख द्वारा बनाया गया। वर्तमान में श्री मूर्तिपूजक समाज का एक ही घर है व उनके द्वारा ही मंदिर की देखरेख की जाती है। पूर्व में श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर होने का उल्लेख है। वर्तमान में शांतिनाथ भगवान का मंदिर है। जिस पर सं. 1942 का लेख होने का भी उल्लेख है। श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर होने की पुष्टि गौमुख यक्ष की प्रतिमा से होती है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री शांतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 14'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर अस्पष्ट लेख है।

उत्थापित धातु की चल प्रतिमाएं व यंत्र :

(1) श्री सुमतिनाथ भगवान की 6'' ऊंची पंच तीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1486 माघ शुदि 11 का लेख है।

(2) श्री अष्टमंगल यंत्र 5''X3'' का है।

सभामण्डप में :

श्री गौमुख यक्ष की श्वेत पाषाण की 10'' ऊंची प्रतिमा है।

वार्षिक ध्वजा नहीं चढ़ाई जाती है। ध्वजा दण्ड नहीं है।

मंदिर की देखरेख श्री प्रकाशजी पारीख द्वारा की जाती है। सम्पर्क सूत्र - 9414262123

श्री शीतलनाथ भगवान का मंदिर, दांतल-311011, तहसील भीलवाड़ा

यह शिखरबंद मंदिर जिला व तहसील मुख्यालय से 10 किलोमीटर दूर है। यह मंदिर केवल 27 वर्ष पूर्व श्री पोखरना परिवार द्वारा निर्माण कराया गया है। भूमि लादुलाल शांतिलाल जी ने मंदिर बनवाने के लिए दी। मंदिर का कुछ कार्य अपूर्ण है। प्रतिष्ठा होनी भी शेष है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री शीतलनाथ भगवान (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 19'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री आदिनाथ भगवान (मूलनायक के दाएं) की श्वेत पाषाण की 10'' ऊंची प्रतिमा है।

(3) श्री शान्तिनाथ भगवान (मूलनायक के बाएं) की श्वेत पाषाण की 10'' ऊंची प्रतिमा है। इन तीनों प्रतिमाओं पर सं. 2063 का लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

(1) श्री शांतिनाथ भगवान की 8'' ऊंची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 2035 का लेख है।

(2) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 6'' का है। इस पर सं. 2035 ज्येष्ठ शु. 2 का लेख है।

(3) श्री अष्टमंगल यंत्र 6'' X 3'' का है। इस पर सं. 2035 ज्येष्ठ शु. 2 का लेख है।

बाहर हॉल में :

(1) श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 7'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की उत्थापित 9'' ऊंची प्रतिमा है।

(3) श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' ऊंची प्रतिमा है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा नहीं चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख श्री लादुलाल जी पोखरना द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र - 01482-280104

श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर सुवाणा-311011, तहसील भीलवाड़ा

यह घूमटबंद मंदिर भीलवाड़ा-माण्डलगढ़ सड़क पर भीलवाड़ा से 5 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है । यह मंदिर 200 वर्ष प्राचीन बताया गया है लेकिन ऐसा कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं हुआ क्योंकि पूर्व में श्री आदिनाथ भगवान की प्रतिमा थी। इस मंदिर का 52 वर्ष पूर्व जीर्णोद्धार कराया गया ।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 11'' ऊंची प्रतिमा है। एक देवकुलिका में स्थापित है। इस प्रतिमा पर वि.सं. 1859 शाके 1726 वैशाख शुदि 3 का लेख है।

आलिएं में :

(1) श्री धरर्णन्द्र देव की श्याम पाषाण की 10'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 10'' ऊंची प्रतिमा है।

मंदिर के प्रवेश करते समय प्रथम बरामदा में शिव पार्वती– हनुमान की प्रतिमा स्थापित है। अतः इस मंदिर का नाम शिव–पार्वती पार्श्वनाथ बालाजी के नाम से पुकारा जाता है। यही नाम लिखा हुआ है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा नहीं चढ़ाई जाती है। कलश व ध्वजा स्थापना का लाभ श्री शोभालालजी हिंगड़ द्वारा लिया गया था।

मंदिर की देखरेख जैन समाज द्वारा की जाती है। समाज की ओर से श्री गणपत लाल जी चपलोत (9352340871) व श्री शम्भूलाल जी खारीवाल (9829208921) द्वारा की जाती है।

श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, कोद्रुकोटा-311011, तहसील भीलवाड़ा

यह घूमटबंद मंदिर भीलवाड़ा से 15 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। इस मंदिर की प्राचीनता के बारे में विशेष जानकारी उपलब्ध नहीं हो पाई। बताया गया है कि 100 वर्ष पूर्व का मंदिर है। प्रतिमा रावला में रखी हुई थी। 15 वर्ष पूर्व नूतन मंदिर समाज द्वारा निर्माण कराया गया। प्रतिमांपर उत्कीर्ण समय के आधार को सही माना जाए तो 75 वर्ष करीब प्राचीन मंदिर है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री शांतिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 17'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर वि.सं. 1992 वैशाख शु. 10 का लेख है।

(2) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 4'' ऊंची प्रतिमा है।

मंदिर की देवकुलिका पर कांच की जड़ाई है।

वार्षिक ध्वजा नहीं चढ़ाई जाती है।

ग्राम में एक भी जैन परिवार नहीं रहता है। पुजारी अनियमित कार्य करता है। अस्वच्छता देखी गई। विचार करना चाहिए।

मंदिर की देखरेख श्री मुकेशजी S/o गोपालसिंह जी (जो भीलवाड़ा रहते है, सप्ताह में एक बार आते है) द्वारा की जाती है।

श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, श्याम विहार कॉलोनी-311001, भीलवाड़ा

यह घुमटबंद मंदिर भीलवाड़ा के नगरपालिका क्षेत्र की श्याम विहार कॉलोनी में स्थित है। मंदिर की भूमि सार्वजनिक है। यहां पर दो पार्क व छतरीयां थी, कितनी थी अज्ञात रही। समतल कर नूतन मंदिर निर्माण करा दिनांक 17-2-12 को प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। एक बावड़ी भी है। इसके पूर्व में इसमें मुस्लिम धर्म के ताजिए प्रवाहित किये जाते थे।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 23'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 21'' ऊंची प्रतिमा है।

(3) श्री महावीर भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 19'' ऊंची प्रतिमा है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

(1) श्री महावीर भगवान की 8'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2068 का लेख है।

(2) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 4'' का है। इस पर सं. 2068 का लेख है।

सभामण्डप के आलियों में :

(1) श्री शांतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 19'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री पार्श्वनाथ का चक्राकार यंत्र।

(3) श्री गौतम स्वामी की श्वेत पाषाण की 19'' ऊंची प्रतिमा है।

(4) श्री चक्रेश्वरी देवी की श्वेत पाषाण की 1.5'' ऊंची प्रतिमा है।

(5) श्री सरस्वती देवी की श्वेत पाषाण की 15'' ऊंची प्रतिमा है।

(6) श्री मुनिसुव्रत भगवान की श्वेत पाषाण की 19'' ऊंची प्रतिमा है।

(7) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 19' ऊंची प्रतिमा है।

(8) श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 19'' ऊंची प्रतिमा है।

(9) श्री गौमुख यक्ष की श्वेत पाषाण की 15'' ऊंची प्रतिमा है।

(10) श्री नाकोड़ा भैरव की श्वेत पाषाण की 19'' ऊंची प्रतिमा है।

दीवार पर शत्रुंजय, तीर्थ, श्री सम्मेदशिखर जी तीर्थ के पट्ट बने हुए है।

वार्षिक ध्वजा आगामी वर्ष से प्रारम्भ होगी।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री सुशील जी पोखरना, श्री कुशलसिंह जी बोल्या 9351552768 द्वारा की जाती है।

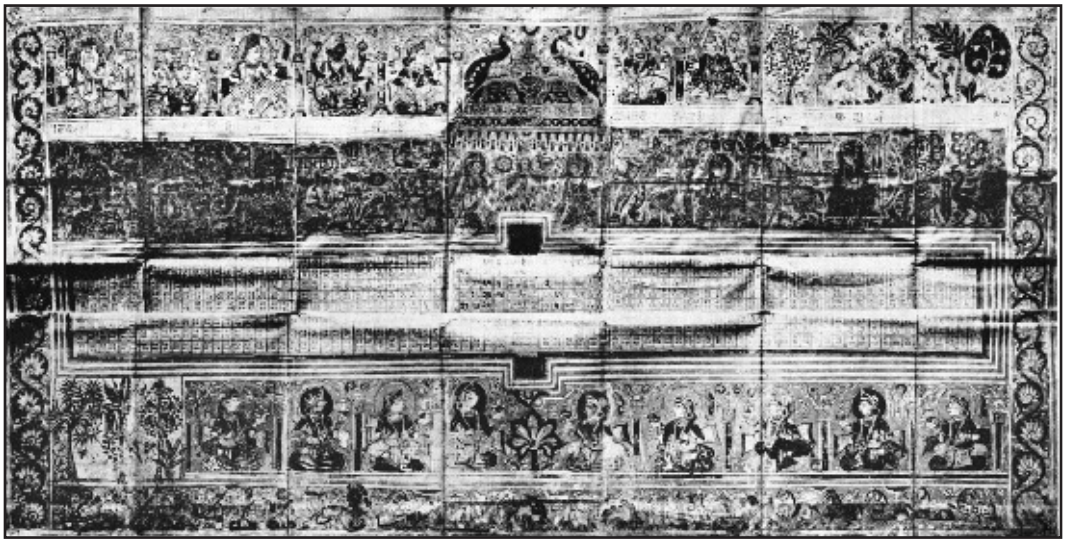

यह चित्र आकर्षिक केनवास पट्टे पर बना है जिसका नाम बसंत विलास स्क्रोल है। इसमें सुपार्श्वनाथ चरित्र को दर्शाया है। ये चित्र लंदन के विक्टोरिया व अलबर्ट संग्रहालय में है। ये चित्र कपड़े पर सन् 1447 में बनाई गई है। इसमें जानवर, पक्षी, हाथी, मोर, पेड़ आदि के चित्र है जिनको जय यंत्र या विजयायंत्र कहा जाता है। जो जैन मुनि खरतरगच्छ के लिए बनाई है। यह कपड़ा अहमदाबाद में पालनपुर के किसी सदस्य के अधिकार से बना है।

श्री महावीर भगवान का मंदिर, जमुना विहार-311001, भीलवाड़ा

यह शिखरबंद मंदिर नगरपालिका क्षेत्र की जमना विहार कॉलोनी में स्थित है। इस मंदिर के लिए भूखण्ड 30'X60' के क्षेत्रफल का भूखण्ड कॉलोनी निर्माण श्री आसनदास भागनानी ने भेंट में दिया। श्री निपुणरत्न विजय म.सा. की प्रेरणा से समाज के सदस्यों ने मंदिर निर्माण कराना प्रारम्भ किया और दिनांक 31-4-05 को भूमि पूजन व शिलान्यास करा मंदिर निर्मित कराकर 22-4-2006 को प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। यह भव्य मंदिर है जिसके तीन दरवाजे है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री महावीर भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 23'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री धर्मनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 19'' ऊंची प्रतिमा है।

(3) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 19'' ऊंची प्रतिमा है।

सभामण्डप में- दाहिनी ओर :

(1) श्री मातंग यक्ष की श्वेत पाषाण की 13'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री गौतम स्वामी की श्वेत पाषाण की 11'' ऊंची प्रतिमा है।

(3) श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 13'' ऊंची प्रतिमा है।

बाईं ओर :

(1) श्री सिद्धायिका देवी की श्वेत पाषाण की 13'' ऊंची प्रतिमा हैं।

(2) श्री रत्नप्रभ सूरिश्वरे जी म.सा. की श्वेत पाषाण की 10'' ऊंची प्रतिमा है।

(3) श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 15'' ऊंची प्रतिमा है।

सभामण्डप में ही श्री सम्मेदशिखरजी व शत्रुंजय तीर्थ के पट्ट बने हुए है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

(1) श्री धर्मनाथ भगवान की 9'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2062 का लेख है।

(2) श्री शान्तिनाथ भगवान की 8'' ऊंची प्रतिमा है।

(3, 4, 5) श्री जिनेश्वर भगवान की छोटी प्रतिमाएं है।

(6) श्री अष्ठमंगल यंत्र है।

(7, 8)श्री अष्ठमंगल यंत्र श्रावकों द्वारा अस्थाई रूप से पूजा के लिये रखे है।

वार्षिक ध्वजा वैशाख सुदि 9 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर संचालन के लिए श्री जमना विहार श्वेताम्बर समिति बनाई गई है। इनकी ओर से श्री ज्ञानकुमार सिंह जी चौधरी (01482-250329), श्री गोपाल सिंह जी चौरड़िया द्वारा की जाती है।

यह चित्र आवश्यक लघुवृति से सन् 1338 में शान्तिनाथ भण्डार मुम्बई में सुरक्षित की गई । बीच में तीर्थंकर व दोनो ओर 11 गणधर देव है । यह समवसरण की रचना है । इस चित्र की लम्बाई 7.5'' व चौड़ाई 2.5' है । आगम अवतार मुनि पुण्यविजय जी म.सा. द्वारा संग्रहित जो अब L.D. Institution of Indology Ahmedabad में है । यू. पी. शाह व मोतीचन्द्र ने कल्पसूत्र सन् 1346 स्वर्णमय व हरे रंगों में प्रकाशित की है ।

श्री नमिनाथ भगवान का मंदिर काशीपुरी-311801, भीलवाड़ा

यह पाटबंद मंदिर (देवरी) नगर की वकील कॉलोनी से जुड़ी हुई काशीपुरी कॉलोनी में स्थापित है। यह मंदिर केवल 18 वर्ष प्राचीन है। इस मंदिर को बनाने के लिए भूखण्ड भी भेंट किया व तत्पश्चात सभी के सहयोग से इस मंदिर का निर्माण कराया।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री नमिनाथ भगवान (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 19'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2050 आषाढ़ कृष्णा 8 का लेख है।

(2) श्री आदिनाथ भगवान (मूलनायक के दाएं) की श्वेत पाषाण की 15'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2050 का लेख है।

(3) श्री मुनिसुव्रत भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 15'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2050 का लेख है।

उत्थापित धातु का अष्ठमंगल यंत्र 6''X4'' का है। इस पर सं. 2064 का लेख है। वेदी की दीवार के बीच पबासन देवी स्थापित है।

सभामण्डप के - पृथक पृथक आलिएं में मूलनायक के दाहिनी ओर :

(1) श्री सहस्त्रफणा पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 25'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2050 वै. शु. 6 का लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं :

(1–2) श्री पार्श्वनाथ भगवान 9'', 9'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर (1) अस्पष्ट लेख है व दूसरी पर सं. 2058 का लेख है।

(3) श्री मुनिसुव्रत भगवान की 7'' ऊंची प्रतिमा है।

(4) श्री शीतलनाथ भगवान की 7'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2054 का लेख है।

(5) श्री सिद्धचक्र यंत्र 4.5'' का गोलाकार है। इस पर सं. 2054 का लेख है।

(6–7) श्री अष्ठमंगल यंत्र 5''X2.5'', 5''X2.5'' का है। इस पर सं. 2054 का लेख है।

(8) श्री अष्ठमंगल यंत्र 6''X3'' का है।

मूलनायक के बाई ओर :

(1) श्री सहस्त्रफणा पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 25'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2050 का लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

(1) श्री सुमतिनाथ भगवान की 11'' ऊंची प्रतिमा है इस पर सं. 2052 वै. शु. 2 का लेख है।

(2) श्री शांतिनाथ भगवान की प्रतिमा है। इस पर सं. 2050 का लेख है।

(3) श्री जिनेश्वर भगवान की चतुर्विंशति प्रतिमा है। इस पर सं. 2064 वै. कृ. 4 का लेख है।

(4) श्री सिद्धचक्र यंत्र 6'' गोलाकार है। इस पर सं. 2064 का लेख है।

(4) श्री अष्ठमंगल यंत्र 6''x3'' का है । इस पर सं. 2064 का लेख है ।

मूल देवरी के पीछे की ओर :

(1) श्री लावण्यसूरिजी की (2) श्री रत्नप्रभ सूरि जी की (3) श्री नेमिसूरिजी की (4) श्री दक्षसूरिजी महाराज का. की श्वेत पाषाण की 13'' ऊंची प्रतिमाएं है।

सभामण्डप में ही – दाहिनी ओर :

श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 13'' ऊंची प्रतिमा है।

श्री भुकुटी यक्ष की श्वेत पाषाण की 13'' ऊंची प्रतिमा है।

बाई ओर :

(1) श्री गन्धारी यक्षिणी की श्वेत पाषाण की 13'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 13'' ऊंची प्रतिमा हैं।

मंदिर में प्रवेश करते समय बरामदा में :

(1) श्री मंगल मूर्ति श्वेत पाषाण की स्थापित है तथा श्री गिरनारजी, सम्मेद शिखर जी व शत्रुंजय तीर्थ के पट्ट लगे है।

वार्षिक ध्वजा ज्येष्ठ कृष्णा 8 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से निम्न द्वारा- श्री जगवीरसिंह जी चौधरी (01482-224912) श्री हस्तीमल जी गुगलिया (01482-224588) श्री नरेन्द्र कुमार जी मेहता (01482-221517) द्वारा की जाती है।

श्री सुमतिनाथ भगवान का मंदिर मांगरोप, जिला भीलवाड़ा

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 17 किलोमीटर भीलवाड़ा-चित्तौड़गढ़ मार्ग पर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर 400 वर्ष प्राचीन बतलाया गया लेकिन इसकी पुष्टि नहीं हो पाई। वर्तमान में 18 वर्ष पूर्व प्रतिष्ठा कराई गई। उल्लेखानुसार यह मंदिर सं. 1985 का पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर था। यह ग्राम तृतीय श्रेणी का ठिकाना रहा है। महाराणा प्रताप के ग्यारहवें पुत्र पूरणमल (पूरा) के वंशज है जो पूरावत कहलाते थे। 18 वर्ष पूर्व मंदिर जीर्ण शीर्ण हो जाने से, प्रतिमाओं को पॉलिश कमजोर हो जाने से नई प्रतिमाओं को बिराजमान कर प्रतिष्ठा कराई।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री सुमतिनाथ भगवान (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 17'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर पीछे लेख है, आगे श्री अजितविजयजी म.सा. द्वारा प्रतिष्ठित अम्बालाल भार्या मूलीदेवी पढ़ने में आता है।

(2) श्री सुविधिनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 13'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर भी पीछे की ओर से लेख है।

(3) श्री वासुपुज्य भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची उत्थापित प्रतिमा है । इस पर पीछे की ओर लेख है ।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

(1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 9'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री जिनेश्वर भगवान की 12'' ऊंची चतुर्विंशति प्रतिमा है।

(3) श्री जिनेश्वर भगवान की 8.5'' ऊंची पंच तीर्थी प्रतिमा है।

(4) श्री जिनेश्वर भगवान की 7'' ऊंची प्रतिमा है।

(5) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 6'' का है। इस पर सं. 2035 ज्येष्ठ शुक्ला 2 का लेख है।

(6) श्री अष्ठमंगल यंत्र 6''X3.5'' का है। इस पर सं. 2045 का ज्येष्ठ शु. 2 का लेख है।

बाहर आलियों में :

(1) श्री तुंबरू यक्ष देव की श्वेत पाषाण की 11'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2025 का लेख है।

(2) श्री महाकाली क्षिणी देवी की श्वेत पाषाण की 11'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2025 का लेख है।

बाहर आलियों में :

(1) श्री जिनेश्वर भगवान (शांतिनाथ) की श्वेत पाषाण की प्राचीन 14'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर अस्पष्ट लेख है। इसको बोलचाल में महावीर भगवान बोला जाता है।

(2) श्री माणिभद्र देव की श्वेत पाषाण की 12'' ऊंची प्रतिमा है।

(3) श्री नाकोड़ा भैरव की श्वेत पाषाण की 16'' ऊंची प्रतिमा है।

(4) श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 13'' ऊंची प्रतिमा है।

परिक्रमा कक्ष बना हुआ है। बाहर हॉल व कमरा है। जमीन ओसवाल समाज की है। जिसमें विद्यालय चलता है, प्राप्त किराये से मंदिर का दैनिक काम किया जाता है।

वार्षिक ध्वजा आषाढ़ माह में चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री लक्ष्मीलाल जी चण्डालिया (01482-280416) व श्री मनोहरसिंह जी सुराणा (94605 67056) द्वारा की जाती है।

श्री महेश दवे
मोली आर्ट्स, देलवाड़ा

श्री महेश दवे ने हमारे साथ भीलवाड़ा जिले में गांव-गांव जाकर व रणकपुर तीर्थ के समस्त मंदिरों व प्रतिमाओं के फोटो लिये।
आपका खूब-खूब आभार

श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर हमीरगढ़-311025, जिला भीलवाड़ा

यह पाटबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 20 किलोमीटर दूर भीलवाड़ा-चित्तौड़ मार्ग पर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह घर देरासर है जिसको यतिजी का मंदिर कहा जाता है। उल्लेखानुसार यह मंदिर यति श्री केसरीचंद जी द्वारा सं. 1853 का निर्मित है।

यह द्वितीय श्रेणी का ठिकाना रहा है। महाराणा उदयसिंह के पुत्र वीरमदेव के वंशज है। इनको ''रावत'' की उपाधि प्रदान की गई थी।

इस मन्दिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री सहस्त्रफणा पार्श्वनाथ भगवान (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 19'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1853 का लेख है।

(2) श्री मुनिसुव्रत भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 11'' ऊंची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

(3) श्री चन्द्रप्रभ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 11'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1840 का लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं :

(1) श्री आदिनाथ भगवान की 5'' ऊंची पंच तीर्थी प्रतिमा है।

(2) श्री गोलाकार यंत्र (बीस स्थानक) 6'' का है।

(3) श्री समवसरण 9'' का है। जिस पर प्रतिमा विराजमान है।

वार्षिक ध्वजा नहीं चढ़ाई जाती है।

मंदिर के साथ भूमि होनी चाहिए लेकिन श्री यतिजी द्वारा कोई जानकारी प्राप्त नहीं हुई तथा कहीं उल्लेख भी नहीं आया। मंदिर की देखरेख यति श्री सुरेश जी द्वारा की जाती है।

श्री विमलनाथ श्री सम्भवनाथ भगवान का मंदिर, बापुनगर-311001, भीलवाड़ा

यह देवरीयुक्त पाटबंद मंदिर नगर के काशी कॉलोनी में स्थित है। यह नूतन मंदिर बापू नगर है। इसकी प्रतिष्ठा भी सं. 2067 में ही सम्पन्न हुई। इस वर्ष इस मंदिर की प्रथम वर्षगांठ थी। इस मंदिर के लिए भूमि श्री शांतिलाल जी बाबेल (सिंघवी) की स्मृति में उनकी पत्नी श्रीमती सुशीला देवी सिंघवी (बाबेल) नि. केरिया ने भेंट दी और समाज के सहयोग से मंदिर निर्माण करा प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री विमलनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 23'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री सम्भवनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 19'' ऊंची प्रतिमा है।

(3) श्री मुनिसुव्रत भगवान (मूलनायक के बाएं) की श्वेत पाषाण की 19'' ऊंची प्रतिमा है।

इन तीनों प्रतिमाओं पर वि.सं. 2067 का लेख है।

नीचे की वेदी पर :

श्री सम्भवनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 11'' ऊंची प्रतिमा है।

सभामण्डप (हॉल में) - पृथक पृथक आलियों में :

(1) श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 13'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) षष्टमुख यक्ष की श्वेत पाषाण की 11'' ऊंची प्रतिमा है।

(3) श्री वासुपूज्य भगवान की श्वेत पाषाण की 19'' ऊंची प्रतिमा है।

(4) श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 15'' ऊंची प्रतिमा हैं।

(5) श्री विजियादेवी की श्वेत पाषाण की 15'' ऊंची प्रतिमा है।

(6) श्री महावीर भगवान की श्वेत पाषाण की 19'' ऊंची प्रतिमा है।

(7) श्री भदेश्वर भैरव की प्रतिमा स्थापित है।

(8) श्री भोमिया जी की प्रतिमा स्थापित है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

(1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 9'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री जिनेश्वर भगवान की 12'' ऊंची चतुर्विंशति प्रतिमा है। इस पर सं. 2067 का लेख है।

(3) श्री सिद्धचक्र यंत्र 4.5'' गोलाकार है।

(4) श्री अष्ठमंगल यंत्र 6.5'' X 4'' का है। इस पर सं. 2066 फा. वदि 14 रविवार का लेख है।

दो पट्ट शत्रुंजय व सम्मेत शिखर जी के है।

इन सभी प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा सं. 2067 में सम्पन्न हुई। मंदिर से जुड़ा हुआ बड़ा हॉल का उपाश्रय है।

वार्षिक ध्वजा ज्येष्ठ शुक्ला 5 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री अनिल जी बोरदिया (9829872634) व श्री सुभाष जी महात्मा (9414302549) द्वारा की जाती है।

ये चित्र वि. सं. 1415 (सन् 1359) शान्तिनाथ चरित्र के
चित्र प्रवर्तक श्री कांतिविजय जी म.सा. द्वारा संग्रहित है जो गुम हो चुके थे।
कल्पसूत्र सन् 1381 खंजाजी संग्रहित राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली

श्री नेमिनाथ भगवान का मंदिर, पुर-311802, जिला भीलवाड़ा

यह शिखरबंद मंदिर भीलवाड़ा नगरपालिका का भाग पुर में स्थित है। रेलवे स्टेशन से 10 किलोमीटर दूर है। प्रतिमा का लेख उल्लेखानुसार यह मंदिर समाज द्वारा सं. 1798 का निर्मित माना गया है। बोलिया वंश परम्परा की ख्यात के आधार पर श्री सुल्तानजी बोलिया ने

शिलान्यास और सं. 1232 में प्रतिष्ठा कराई। मुगलों द्वारा यह मंदिर तोड़ दिया गया था। सर्वप्रथम इस मंदिर जिर्णोद्धार सं. 1376 में हुआ। इसके बाद पुनः सं. 1619 वैशाख शु. 3 को जीर्णोद्धार हुआ और 1695 से समाचंद जी, भागचंद जी की ओर से ध्वजादण्ड चढ़ाया। पुनः आक्रमण हुआ और जीर्णोद्धार करा संवत् 1798 वैशाख वदि 6 को प्रतिष्ठा श्री अनोप जी बोलिया परिवार ने कराई। जिसमें 10,000/- खर्च हुए और सं. 1802 में उनके निवास पर महाराजा जगतसिंह जी घर पधारे।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री नेमिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 29'' ऊंची प्रतिमा हैं। इस पर सं. 1798 वै. शु. 3 का लेख है।

(2) श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 25'' ऊंची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर सं. 1650 शाके 1515 पौष सुदि 5 का लेख है।

(3) श्री सम्भवनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 25'' ऊंची प्रतिमा है।

श्री जिनेश्वर भगवान का पट्ट 4''x2.5'' का पिंक रंग का है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

(1) श्री वासुपूज्य भगवान की 7'' ऊंची पंच तीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1577 माघ सुदि 5 का लेख है।

(2) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 6'' का है। इस पर सं. 2040 माघ कृष्णा प्रतिपदा का लेख है।

(3) श्री अष्ठमंगल यंत्र 6'' X 3'' का है। इस पर सं. 2040 माघ कृष्णा प्रतिपदा का लेख है।

(4) श्री जिनेश्वर भगवान की 12'' ऊंची चतुर्विशंति प्रतिमा है। इस पर सं. 15–11–2008 का लेख है।

(5–6) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 2.5'', 1.5'' ऊंची प्रतिमा है।

अधिष्ठायक देव की 16'' ऊंची प्रतिमा है।

वार्षिक ध्वजा नहीं चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख स्थाई फण्ड से प्राप्त आय व जन सहयोग से समाज की ओर से श्री माणकचंद जी ढिलीवाल करते है। सम्पर्क सूत्र - 9413995404

यह चित्र सन् 1433 की बना हुई है जिसको सर्वपप्रथम मुनि पुण्यविजय जी म.सा. द्वारा। यह कल्पसूत्र में दिखाया गया है जिसमें पेड़, फूल, पत्ते आदि को एक ही कलम से बनाई गई है। इसके बाद मोतीचन्द्र ने दिखाई।

श्री चन्द्रप्रभ भगवान का मन्दिर, पुर-311802, तहसील भीलवाड़ा

यह शिखरबंद मंदिर भीलवाड़ा नगर पालिका का पुर एक अंग है। यह रेलवे स्टेशन से 10 किलोमीटर दूर है। यह 500 वर्ष प्राचीन मंदिर होना बताया गया है। जिर्णोद्धार कराया गया ।गत जिर्णोद्धार में भव्य प्रवेशद्वार बनाया गया। प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख को आधार माना जाए तो 500 वर्ष प्राचीन है। उल्लेखानुसार श्री मूलचंद जी सिंघवी द्वारा लगभग करीब 1900 के लगभग निर्मित है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री चन्द्रप्रभ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 17'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1545 का लेख है।

(2) श्री मुनिसुव्रत भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 15'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1548 का लेख है।

(3) श्री चन्द्रप्रभ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 15'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1548 का लेख है।

अष्ठमंगल यंत्र 5''X 3'' का उत्थापित धातु का यंत्र है। इस पर सं. 2062 का लेख है।

बाहर दोनों ओर आलियों में :

श्री विजय यक्ष की श्याम पाषाण की 11'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2052 का लेख है।

श्री ज्वाला यक्षिणी की श्याम पाषाण की 11'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2052 ज्येष्ठ कृष्णा 11 का लेख है।

माणिभद्र की प्रतिमा 9'' ऊंची प्रतिमा है।

परिक्रमा क्षेत्र में तीन मंगल मूर्ति स्थापित है।

वार्षिक ध्वजा ज्येष्ठ कृष्णा 11 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की चार दुकानें है ।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री गहरीलाल जी सिंघवी (बाबेल)द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र : 96024067578

श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, पुर-311002, तहसील भीलवाड़ा

प्राचीन उपाश्रय जो जीर्ण-शीर्ण अवस्था में खण्डित है। प्रथम मंजिल में कमरे बने हुए है। जहां यतिजी निवास करते थे। उपाश्रय के 12 स्तम्भ बने हुए है। इसी उपाश्रय में श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 18'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1850 का लेख है। अन्य खण्डित मूर्तियां भी रखी हुई है।

एक अति प्राचीन खण्डित प्रतिमा आ. श्री पद्मसागरसूरि जी म.सा. ने द्वारा कोबा (अहमदाबाद) के संग्रहालय में भेजी गई।

श्री चौमुखा जी का मंदिर, पुर-311802, भीलवाड़ा

यह एक खण्डित मंदिर है जो बिल्कुल ढह गया है। यह मंदिर 4-5 गोत्री समाज द्वारा बनाया गया है। अभी भी उनके (समाज) नियंत्रण में है।

इस चतुर्मुखी मंदिर के खण्डहर के चित्र इस प्रकार है ।

श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर पुर, 311002, भीलवाड़ा

यह शिखरबंद मंदिर भीलवाड़ा नगरपालिका का पुर एक अंग है। यह रेलवे स्टेशन से 10 किलोमीटर दूर है। उल्लेखानुसार यह मंदिर पुर के नैनावटी मोहल्ला में स्थित है। मंदिर वर्धमान जी भागचंद जी नैनावटी द्वारा सं. 1800 के लगभग में निर्मित है। अतः 250 वर्ष प्राचीन है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 29'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1893 शाके 1750 का लेख है।

(2) श्री शांतिनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 21'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1850 शा के 1715 ज्येष्ठ सुदि 10 का लेख है।

(3) श्री नेमिनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 21'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1850 शाके 1715 ज्येष्ठ सुदि 10 का लेख है।

आलियों में :

(1) श्री मुनिसुव्रत भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 17'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1850 का लेख है।

(2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 21'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1850 का लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं एवं यंत्र :

(1) श्री आदिनाथ भगवान की 8'' ऊंची पंच तीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 2047 का लेख है।

(2) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 6'' का है। इस पर सं. 2049 का लेख है।

(3) श्री अष्ठमंगल यंत्र 6'' x 3'' का है। इस पर सं. 2049 का लेख है।

(4) श्री जिनेश्वर भगवान की 5'' ऊंची प्रतिमा है।

वेदी की दीवार पर पबासन देवी की मूर्ति स्थापित है।

बाहर :

(1) श्री गौमुख यक्ष की श्याम पाषाण की 10'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री चक्रेश्वरी देवी की श्याम पाषाण की 10'' ऊंची प्रतिमा है।

अधिष्ठायक देव की 17'' ऊंची मूर्ति है। शिखर व अन्य स्थान पर जीर्णोद्धार की आवश्यकता है।

वार्षिक ध्वजा वैशाख सुदि 9 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री विजयसिंह जी नैनावटी द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र - 01482-262151

इस चित्र में स्तवन (भजन) नृत्य बताया है जो लाल रंग में है। पीली किनारी है। इसमें राजा जिन्होंने लम्बा पाजामा पहने हैं। चोकोर सेठी पर बैठे है। इसके ऊपर छतरी है। सामने नृत्य करती हुए महिला घूंघट लिये है।

श्री आदिनाथ भगवान (चौमुखाजी) मंदिर पुर, 311002, तहसील भीलवाड़ा

यह शिखरबंद मंदिर भीलवाड़ा नगर पालिका का एक अंग है। यह मंदिर कस्बे के बाहर 7 वर्ष पूर्व ही खाब्या परिवार द्वारा निर्मित है। यह एक घर देरासर है। समवसरण के रूप से निर्मित सिंहासन पर प्रतिमा बिराजमान है। मंदिर का भूखण्ड खाब्या परिवार का है।

चारों ओर से 5 प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री आदिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 15'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण 15'' ऊंची प्रतिमा है।

(3) श्री शांतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 15'' ऊंची प्रतिमा है।

(4) श्री महावीर भगवान की श्वेत पाषाण की 15'' ऊंची प्रतिमा है।

नीचे :

(1) श्री सिद्ध भगवान की पीत पाषाण की 8'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री आचार्य महाराज की श्याम पाषाण की 5'' ऊंची प्रतिमा है।

(3) श्री आचार्य महाराज की हरे पाषाण की 8'' ऊंची प्रतिमा है।

चारों ओर मूर्तियें स्थापित है :

(1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की धातु की 14'' ऊंची पंच तीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 2052 का लेख है।

(2) श्री शांतिनाथ भगवान की धातु की 8'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2052 का लेख है।

(3) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 6'' का है। इस पर सं. 2062 का लेख है।

(4) श्री अष्ठमंगल यंत्र 6'' x 3'' का है। इस पर सं. 2062 का लेख है।

दीवार की देवरियों में :

(1) श्री सिद्धचक्र यंत्र (बीसस्थानक यंत्र) गोलाकार श्वेत पाषाण का 5'' ऊंचा है।

(2) श्री गौमुख यक्ष श्वेत पाषाण की 15'' ऊंची प्रतिमा है।

(3) चक्रेश्वरी देवी की श्याम पाषाण की 13'' ऊंची प्रतिमा है।

(4) श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 11'' ऊंची प्रतिमा है।

वार्षिक ध्वजा वैशाख शुक्ला 5 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख श्री गणपतलाल जी खाब्या द्वारा की जाती है। सम्पर्क सूत्र- 9887431996

यह चित्र दो भागों में है जिसमें से ऊपर महावीर भगवान की माँ का है जिसके पीछे एक परिचायिका छाता व दूसरी पंखा लिए खड़ी है। माँ गर्भवती है वे खुश है, सिर पर बड़ी बिंदी है व आकर्षित गहने पहने हुई है। यह सन् 1400-1420 (15 वीं शताब्दी) की है। ये सब चित्र मुनि पुण्यविजय जी म.सा. ने कल्पसूत्र में दर्शाया है।

श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, गुरला-तहसील भीलवाड़ा

यह घूमटबंद मंदिर भीलवाड़ा-गंगापुर सड़क पर भीलवाड़ा से 20 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर 500 वर्ष प्राचीन बताते है। प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख का आधार माना जाए तो 550 वर्ष प्राचीन होता है। उल्लेखानुसार यह मंदिर श्री अजितनाथ भगवान का रहा है और सं. 1900 के लगभग में निर्माण हुआ। इस मंदिर का जिर्णोद्धार संवत 2056 में हुआ जिसमें देवकुलिका नई बनवाई गई प्रतिमा स्थापित की गई। मंदिर प्रतिमाओं के लिए तीन देवरिया बनी है। यह ग्राम तृतीय श्रेणी का ठिकाना रहा है। इसके शासक पुरावत कहलाते थे।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 19'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2056 माघ शुक्ला 7 का लेख है।

(2) श्री श्रेयांसनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 11'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2056 माघ शुक्ला 7 का लेख है।

(3) श्री पद्मप्रभ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 9'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1519 का लेख है।

(4) श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 11'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1528 वै. शु. 3 का लेख है।

(5) श्री सुमतिनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्याम पाषाण की 10'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2056 का लेख है।

नीचे की वेदी पर :

श्री सम्भवनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 6'' ऊंची प्रतिमा है।

वेदी की दीवार पर पबासन देवी की श्वेत पाषाण की प्रतिमा है।

उत्थापित धातु की चल प्रतिमाएं व यंत्र :

(1) श्री शांतिनाथ भगवान की 8'' ऊंची पंच तीर्थी प्रतिमा है। यह श्री जितेन्द्र मुनि जी द्वारा प्रतिष्ठित है।

(2) श्री जिनेश्वर भगवान की 4'' ऊंची (मय सिहासन के) प्रतिमा है।

(3) श्री अजितनाथ भगवान की 6'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1495 ज्येष्ठ सुदि 13 का लेख है।

(4) श्री जिनेश्वर भगवान की 1.5'' ऊंची प्रतिमा है।

(5) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 4.5'' का है।

निज मंदिर के बाहर व सभा मण्डप में :

(1) श्री पार्श्वयक्ष श्याम पाषाण की 10'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री पद्मावती देवी की श्याम पाषाण की 9'' ऊंची प्रतिमा है।

(3) श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 13'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2056 मिगसर सुदि 5 का लेख है। परिक्रमा कक्ष में एक कमरा मंदिर का सामान रखने हेतु बना हुआ है। उपाश्रय बना हुआ है।

वार्षिक ध्वजा माघ शुक्ला 7 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख ओसवाल जैन संघ द्वारा की जाती है। उसकी ओर से श्री चांदमल जी मेहता (01482-251887)व श्री सुरेश जी बोहरा द्वारा की जाती है।

इस चित्र में एक परदेशी भगवान से मिलता है। एक आचार्य जो अपना प्रवचन दे रहे हैं, सामने स्थापना है।

श्री पार्श्वनाथ भगवान व दादावाड़ी मंदिर, गुरला, तहसील भीलवाड़ा

यह घूमटबंद मंदिर भीलवाड़ा-गंगापुर सड़क के किनारे गांव के बाहर के तालाब के किनारे स्थित है। यह भीलवाड़ा से 20 किलोमीटर दूर है। यह दादावाड़ी करीब 500 वर्ष प्राचीन है। दादागुरू की छतरी के भीतर 17'' के पाट पर श्री जिनदत्तसूरि के 8'' लम्बे चरण स्थापित है। पाट के किनारे सं. 1736 का लेख है व 23'' लम्बे पाट पर 8'' लम्बे चरण पादुका स्थापित है। इस पर सं. 1331 का लेख है। यह ग्राम तृतीय श्रेणी का ठिकाना है। इसके शासक पुरावत कहलाते है। इन चरण-पादुकाएं के किनारे की ओर सामने श्री जिनकुशलसूरि की श्वेत पाषाण की 17''ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2059 का लेख है।

सभामण्डप में प्रवेश के समय दाईं ओर :

(1) श्री जिनकांतिसागर सूरीश्वर जी म.सा. की श्वेत पाषाण की 15'' ऊंची मूर्ति है। इस पर सं. 2059 जेष्ठ कृष्णा 10 का लेख है।

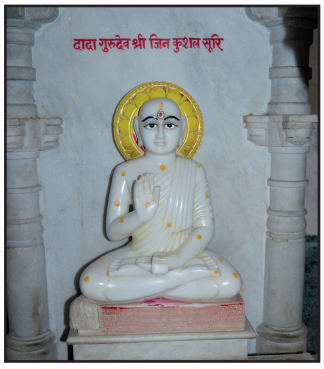

बाईं ओर :

(1) श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 16'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2059 ज्येष्ठ कृष्णा 10 का लेख है।

प्रथम मंजिल पर देव कुलिका में :

श्री जीरावला पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 19'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2029 का लेख है।

दोनों ओर :

(1) श्री पार्श्वयक्ष की श्वेत पाषाण की 13'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 15'' ऊंची प्रतिमा है।

पीछे खुली जगह है व एक कमरा है।

वार्षिक ध्वजा ज्येष्ठ कृष्णा 10 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री चांदमल जी मेहता (01482-251887)व श्री सुरेश जी बोहरा द्वारा की जाती है।

ये चित्र चक्रवती राजा के चौदस रत्नों को दर्शाया गया है जो समग्रहिणी सूत्र से सनफ 1630 में पाटन में बनाया है। यह मुनि श्री पुण्यविजयजी म.सा. द्वारा संग्रहित है।